शेख़ फ़रीद – सबद ५२
फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥
गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥४८॥

सार: शारीरिक मृत्यु शरीर के अंत की प्राकृतिक प्रक्रिया है जबकि आध्यात्मिक मृत्यु तब होती है जब हम जीवित होते हुए भी लगातार अपने भीतर से समझौता करते रहते हैं। आध्यात्मिक मृत्यु हमारी अंतरात्मा की चेतना का धीरे-धीरे धुंधला पड़ना है, ऐसा तब होता है जब हम आत्मचिंतन करना छोड़ देते हैं। शारीरिक मृत्यु एक ही बार होती है लेकिन आध्यात्मिक मृत्यु में, हम अपने भीतर की स्पष्टता को बार-बार खोने का अनुभव करते हैं जिससे हमें ख़ालीपन या अलगाव का एहसास होता है। वास्तविक कष्ट मृत्यु में नहीं बल्कि उस जीवन में है जिसमें आंतरिक जीवंतता का अभाव हो। पुनर्जीवन का अर्थ है अपनी अंतरात्मा की सत्यनिष्ठा को पुनः प्राप्त करना।

फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥
फ़रीद कहते हैं कि भले ही दो दीपक तेज़ी से जल रहे हों लेकिन मृत्यु आ ही जाती है और अपना डेरा जमा लेती है। यह दीपक मन की द्वैतता का प्रतीक हैं जो 'तुम' और 'मैं' के बीच भेद-भाव तो करता है लेकिन साँझी नश्वरता से अनजान बना रहता है।

गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥४८॥
क़िले पर क़ब्ज़ा हो गया है, पात्र लूट लिया गया है और दीपक बुझ गए हैं। यह मन और शरीर के प्रकृति की प्रक्रियाओं के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है जिससे अहंकार की पकड़ अंत हो जाता है। (४८)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद गहन अंतर्दृष्टि को उजागर करने के लिए कुशलतापूर्वक रूपकों का प्रयोग करते हैं। वह "क़िले" पर क़ब्ज़ा किए जाने, "जहाज़" के लूट का शिकार होने और दीपक के बुझने का उदाहरण देते हैं। यह अभिव्यक्तियाँ न केवल शारीरिक मृत्यु की वास्तविकता को दर्शाती हैं बल्कि उस आंतरिक पतन को भी उजागर करती हैं जो जागरूकता के अभाव से उत्पन्न होता है। हालांकि, यदि हम अपने अनदेखे व्यवहारों का अवलोकन करें तब हमें बांधने वाले मन के बंधन ढीले पड़ जाते हैं, सार्वभौमिक नियमों के प्रति समर्पण अहंकार की पकड़ को कमजोर करता है जिससे हमें मुक्ति मिलती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com